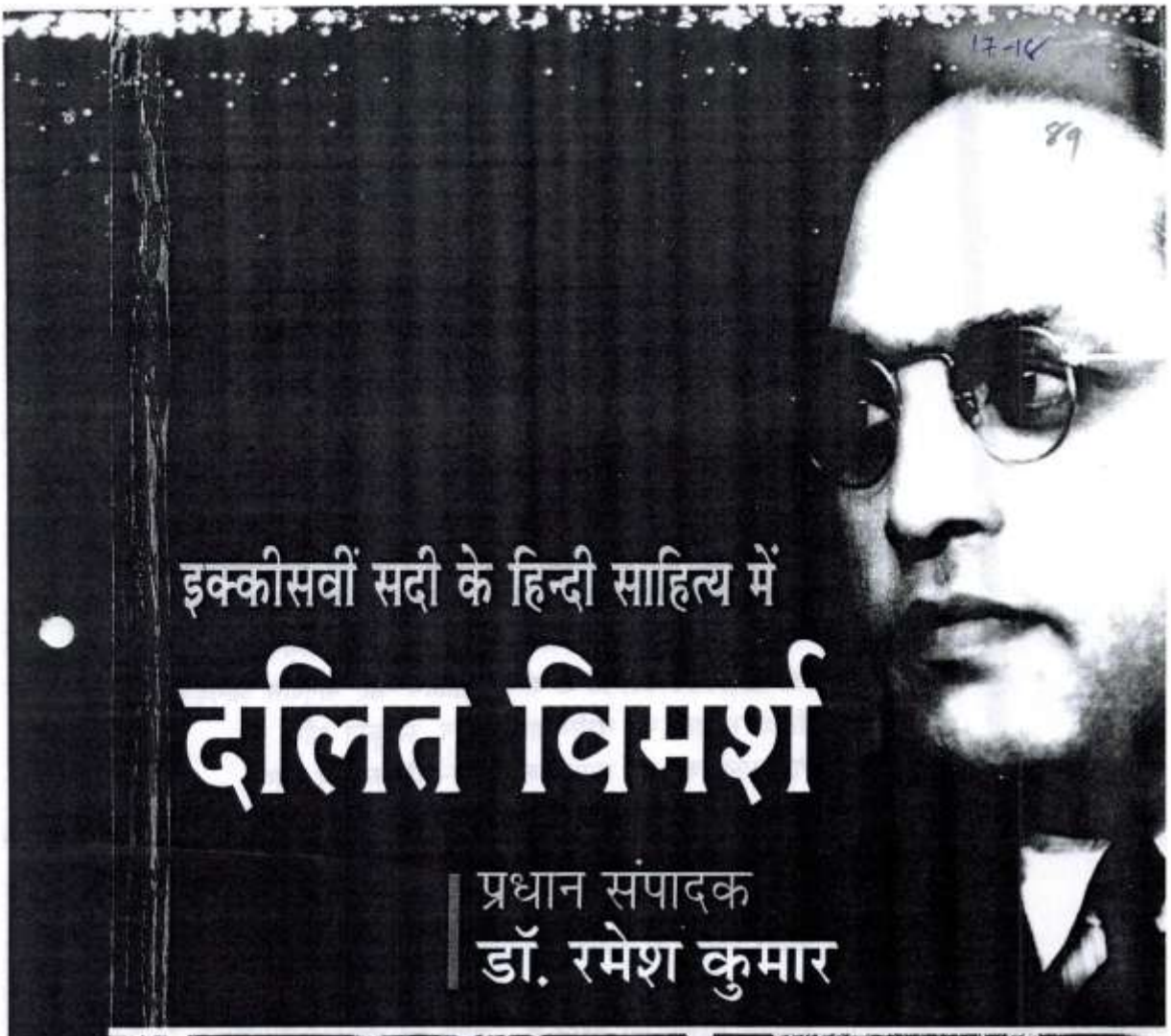

इक्कीसवीं सदी के हिन्दी साहित्य में

दलित विमर्श

प्रधान संपादक
डॉ. रमेश कुमार

प्रकाशक
श्री नटराज प्रकाशन
ए-507/12, साउथ गामडी एक्स.
दिल्ली-110053
फोन नं. 011-45041604
E-mail : shreentrajprakashan@gmail.com

ISBN : 978-93-86113-74-0

©: संपादक

मूल्य : 1495.00 रुपए

प्रथम संस्करण : 2018

शब्द-संयोजन : प्रिंस कम्प्यूटर्स, दिल्ली-110094

मुद्रक : पूजा ऑफसेट, दिल्ली-110053

भारत में मुद्रित : EKKISHVIN SADI KE HINDI SAHITYAME DALIT VIMARSH Edited By Dr. Ramesh Kumar

श्री नटराज प्रकाशन, ए-507/12, साउथ गामडी एक्स. दिल्ली-110053 से टी. एस. राघव द्वारा प्रकाशित, प्रिंस कम्प्यूटर्स द्वारा पृष्ठ सज्जा व शशि सिंह द्वारा आवरण सज्जा तथा पूजा ऑफसेट प्रेस, दिल्ली-110091 द्वारा मुद्रित।

54 हिंदी दलित कहानीकार मोहनदास नैमिशराय–डॉ. ए.डी. चावड़ा 446
55 ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में चित्रित यथार्थ 459
–डॉ. भारत श्रीमंत खिलारे
56 दलित चेतना की अभिव्यक्ति करने वाली हिंदी की प्रमुख 469
दलित आत्मकथायें–प्रो. डॉ. भारती सी. रावत
57 उत्तर आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में दलित कविताएँ 476
–डॉ. सुमाटी. रोडनवर
58 हिन्दी साहित्य में दलित विमर्श–डॉ. परशुराम गणपति मालगे 483
59 बाल श्रमिकों की समस्या–डॉ. शालिनी रविंद्र चिंचोरे 488
60 नयी सदी की लघुकथाओं में व्यक्त दलित चेतना 492
–डॉ. रमेश कुमार
61 दलित आन्दोलन–डॉ. अमिता 511
62 दामोदर मोरे की कविताओं में अंबेडकरवादी संचेतना का अवदान 515
–डॉ. तात्याराव सूर्यवंशी
63 रत्नकुमार सांभरिया की लघु कथाओं में हाशिये पर समाज 522
–रुद्रप्रताप सिंह
64. प्रेमचंद और निराला की रचनाओं में निहित दलित चेतना 531
–डॉ. एन. लक्ष्मी
65. वीमा ज्योतिहीन दलित का भास्वर प्रतिरोध 541
–डॉ. स्मृति आनंद
76. जब भी गरीब और दलित पर अत्याचार होगा में बोलूंगा : 546
तुलसीराम–डॉ. गीता सिंह
67. प्रेमचंद की कहानियों में दलित विमर्श –निधि सिंह 551
68. अरविंद की कविताओं में दलित विमर्श – डॉ. अर्चिता सिंह 556
69. आधुनिक हिंदी की प्रमुख कहानियों में आदिवासी 560
जीवन परिदृश्य–डॉ. एल.पी.लमाणी
70. हिंदी कविता में अम्बेडकरवादी चेतना 567
(संदर्भ : ओमप्रकाश वाल्मीकि व दामोदर मोरे)
–हरपाल सिंह 'अरुष'

56

दलित चेतना की अभिव्यक्ति करने वाली हिन्दी की प्रमुख दलित आत्मकथाएँ

प्रो. डॉ. भारती सी. रावत

इक्कीसवीं सदी के भारत में पनपी दलित चेतना डॉ.भीमराव आम्बेडकर की सामाजिक क्रांति विचारधारा का परिणाम हैं। इस क्रान्तिकारी विचारधारा से प्रभावित होकर समस्त भारतीय भाषाओं ने अपने साहित्य का अहम मुद्दा बनाया और साहित्य की प्रत्येक विधा में उसे स्थान दिया हैं। सर्व प्रथम मराठी भाषा में दलित चेतना का उदभव हुआ मराठी में आत्मकथा और काव्य के माध्यम से यह विकसित हुई। और बाद में उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध, संस्मरण आदि में भी अपना स्थान कायम किया हैं। बाबा साहेब के क्रान्तिकारी विचारधारा को दलित साहित्यकार आम्बेडकरवाद कहते हैं। दलित साहित्य, दलितों की जीवन संघर्ष-गाथा हैं साहित्य में इस विचारधारा का उदभव और विकास एकदम नहीं हुआ। इस विचारधारा के उदभव और विकास के पीछे घृणा, क्रोध, आक्रोश, पीड़ा, विद्रोह, और क्रांति का ऐसा इतिहास हैं, जो साधारणतया बहुत ही कम दृष्टिगत होता हैं। दलित साहित्य सदियों से दलित, पीड़ित, शोषित समाज पर हुए अन्याय और अत्याचार का चित्रण एवं उसका विरोध तथा दलित जीवन का अंकन करने वाला साहित्य हैं।

हिंदी में दलित आत्मकथा लेखन की प्रेरणा मराठी साहित्य से मिली हैं। भारतीय साहित्य में सर्वप्रथम दलित आत्मकथा लेखन की शुरुआत मराठी भाषा में हुई। मराठी में डॉ.भीमराव आम्बेडकर ने अपनी आत्मकथा 'मी कसा झालो' अर्थात् 'मैं कैसे बना' लिखी हैं। इसी दलित आत्मकथा से दलित साहित्यकारों को आत्मकथा लिखने की प्रेरणा मिली हैं। मराठी में दलित आत्मकथा लिखनेवाले कवियों में शरणकुमार लिम्बाले, लक्ष्मण गायकवाड, दया पवार, दादा साहब मोरे, लक्ष्मण माने, शंकरराव खरात आदि प्रमुख हैं।

समकालीन हिंदी साहित्य के इसी दौर में उपन्यास साहित्य को एक नया कलेवर मिला वह नया कलेवर आत्मकथात्मक उपन्यासों का हैं। हिंदी साहित्य में इससे पूर्व या तो पूरी तरह उपन्यास लिखे गये थे या आत्मकथा लिखी गई थी। दलित